International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 4; July 2018; Page No. 35-37

विकास प्रशासन में जनसंचार की भूमिका

डॉ0 कविता राज
Guest Faculty, Public Administration, A.N. College, Patna, Bihar, India

प्रस्तावना

कोई भी देश हो, वहाँ की शासन व्यवस्था जिस प्रकार की हो, सभी देशों की सरकारें सदा कोशिश करती रहती है कि जनता के बीच उसकी छवि सुन्दर बनी रहे। विकास के लिए जो भी प्रशासकीय कदम उठाए जाए उसको अपनाने के लिए जनता आगे आए। इसके लिए सरकार सूचना–माध्यमों का सहारा लेती है। विचारों के आदान–प्रदान समस्याओं पर चर्चा, उन्नति और विकास योजनाओं की सूचना जल्द–से–जल्द उपलब्ध कराने में जनसंचार–माध्यमों का महत्वपूर्ण योगदान है। साथ ही जनता की इच्छा, उनके विचारों को भी जानने में जनसंचार द्वारा सरकार को बहुंत लाभ मिलता है। राज्यों के कार्यो को सम्पादित करने के लिए विकास–तंत्र की अनुभूति अतीत से ही रही है। प्रशासन तंत्र के अभाव में किसी भी प्रकार के संगठन के कार्यो को संचालित करना संभव नहीं है। वर्तमान युग में प्रशासन समाज तथा राज्य का एक अति आवश्यक तत्व है। प्रशासन समाज में सुरक्षा, व्यवस्था, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि इत्यादि जैसी प्रमुख आवश्यकताओं को पूर्ण करने का उत्तरदायित्व निभाता है। आधुनिक युग में विकास प्रशासन की आवश्यकता इसलिए भी होती है क्योंकि प्रशासन मानव कल्याण से संबंधित सृजनात्मक एवं सकारात्मक कार्यो को पूर्ण करने में समर्थ होता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में कोई भी विकास संबंधित योजनाएँ तबकि प्रभावी ढंग से क्रियान्वित नहीं की जा सकती जबतक उसके प्रशासकीय तत्वों को पूर्णतः न समझ लिया जाए और उसी के अनुरूप प्रशासन तंत्र की व्यवस्था न की जाए।

प्राचीनकाल में मानव की आवश्यकताएँ सीमित थी, अतः राज्य के कार्य भी सीमित थे। राज्य का कार्य केवल शांति एवं सुव्यवस्था कायम करना था, लेकिन जैसे–जैसे मानव की आवश्यकताएँ बढ़ती गई राज्य का कार्य भी बढ़ता चला गया। अब राज्य का स्वरूप ''पुलिस राज्य'' से ''लोककल्याणकारी'' हो गया, जिससे लोकप्रशासन की आवश्यकता बढ़ी और राज्य का स्वरूप पुनः प्रशासकीय राज्य की ओर उन्मुख हुआ। फलस्वरूप लोकप्रशासन पर निर्भरता बढ़ी तथा योग्य, कर्मठ, ईमानदार लोकसेवकों की आवश्यकता बढ़ी।

भारत जैसे प्रजातांत्रिक तथा विकासशील देशों में लोक प्रशासन को समस्त नीतियों एवं लक्ष्यों के क्रियान्वयन का मुख्य माध्यम माना जाता है। प्रजातांत्रिक और समाजवादी व्यवस्थाओं में शासन की सम्पूर्ण सत्ता तथा लोककल्याण का उत्तरदायित्व सरकार में निहित होता है। सरकारी नीतियों का क्रियान्वयन प्रशासन के माध्यम से होता है। योजनागत नियोजन तथा विभिन्न परियोजनाओं नियामकीय तथा विकास प्रशासन से संबंधित कार्यो का सफल क्रियान्वयन कर्मठ, कुशल, निष्ठावान तथा उत्तरदायी प्रशासकों के प्रयासों से सम्भव है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रदत्त व्यवस्थापन के माध्यम से लोकसेवकों को सत्ता तथा शक्ति राजनैतिक अध्यक्षों द्वारा हस्तांतरित की जाती है। संसदीय व्यवस्था कृत्यों का अंतिम उत्तरदायित्व यद्यपि राजनैतिक अध्यक्ष का ही रहता है, तथापि लोकसेवकों तथा प्रशासकों के क्रियाकलापों पर सतत निगरानी व अंकुश की परम आवश्यकता होती है। सत्ता व शक्ति के दुरूपयोग को रोकने के लिए यह अनिवार्य है।

प्रतिनिधियात्मक लोकतांत्रिक व्वस्था में प्रशासन की जवावदेहिता जनता के प्रति होती है। इस जवाबदेहिता की निरन्तर जाँच का कार्य जनसंचार माध्यम या प्रेस करती है। अपनी कलम के माध्यम से वह व्यापक स्तर पर जनसमूह को सूचनाएँ पहुँचाती है तथा जनता के विचारो को स्वर प्रदान करती है। व्यवस्था को सुचारू रूप से गतिमान रखने, विषमताओं को कम करने, अराजकताओं को समाप्त करने तथा जन आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति का कार्य प्रमुखतः जनसंचार माध्यमों के सुपुर्द है। अतः इनके पास जनशक्ति का आधार होता है।

जन्म से पूर्व से लेकर मृत्यु के पश्चात तक की मनुष्य की प्रत्येक गतिविधियों का दायित्व यद्यपि प्रशासन के ऊपर है तो इतना ही सच है कि जन्म से पूर्व से लेकर मृत्यु के पश्चात तक होने वाली तमाम गतिविधियों पर जनसंचार की नजर होती है। इस प्रकार प्रशासन और जनसंचार एक दूसरे के पूरक और पर्यायवाची कहे जा सकते हैं। इस प्रकार प्रशासन और जनसंचार माध्यमों की पैनी नजर प्रशासन के क्रियाकलाप पर होती है और वह माध्यम बनता है जनता तक इन क्रियाकलापों को पहुँचाने का। आम नागरिक प्रशासन की नीतियों, कार्यक्रमों को कितना आत्मसात कर पा रहा हैा, उसकी तह तक जाने का काम जनसंचार माध्यम करते हैं। यही नहीं आम जनता की समस्याओं को प्रशासन तक लाने का काम भी जनसंचार का ही होता है। इस प्रकार जनता और प्रशासन के बीच की कड़ी जनसंचार माध्यम है।

''विकास'' की बात हम जब भी करते हैं तो जनसहभागिता उसमें स्वतः जुड़ जाती है। ''विकास'' के लिए अधिक–से–अधिक जनसहभागिता हो इसका काम जनसंचार माध्यम कर सकते हैं। जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रशासन प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से प्रभावित करता है। प्रशासन की इस महत्वपूर्ण भूमिका पर जनसंचार माध्यमों का कितना ध्यान जा पाता है तथा प्रशासन का भी जनसंचार के प्रति क्या व्यवहार रहता है, इस तथ्य को परखा जाना अत्यन्त आवश्यक है। जनसंचार माध्यम प्रशासनिक विभागों, उनके कार्यो, उपलब्धियों, अक्षमताओं, जनता से अधिकारियों एवं कर्मचारियों के संबंध, प्रशासन की जनछवि, प्रशासनिक समस्याओं आदि पर कितना ध्यान केन्द्रित कर रही है, यह जानना आवश्यक है। इस प्रसंग में यह बात उभर आती है कि प्रशासन ''विकास'' हेतु कितना सजग है और जनसंचार माध्यम प्रशासन को इस बात के लिए मदद कर सकती है कि ''विकास'' हेतु प्रशासन किन–किन नीतियों, कार्यक्रमों आदि में बदलाव लाए और यहीं पर ''विकास प्रशासन'' विषय उभरकर आता है। साथ ही ''जनसंचार की भूमिका विकास प्रशासन में'' किस प्रकार की होनी चाहिए, संदर्भ उत्पन्न

होता है।

मानव ही समस्त प्रशासकीय व्यवस्था का संचालक स्त्रोत, आधार और मार्गदृष्टा है। प्रशासन पर परम्पराओं, सभ्यता, संस्कृति, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक बाह्यय वातावरण का प्रभाव पड़ता है। इन सबका संबंध मानव से होता है।

विकाशसील देशो में विकास में महत्वपूर्ण भूमिका नई संचार तकनीकियाँ निभाती है। बवउचनजमत प्रणाली का प्रयोग वरदान साबित हो रहा है विकास प्रशासन में।

सबसे अहम है विकास–प्रशासन में जनसम्पर्क तथा जनसहभागिता विकास कार्यक्रम जनता के हित के लिए होते है। अतः जनसहयोग प्राप्त करना आवश्यक है। इसके अभाव मे सफलता प्राप्त करना संभव नहीं है। वस्तुतः जनसम्पर्क से यह जानने का प्रयास किया जाता है कि जनकल्याण के लिए विकास के जो कार्यक्रम चलाए जा रहे है उसका कितना लाभ जनता तक पहुंचता है तथा जनता की उस संबंध में क्या प्रतिक्रिया है। इसके लिए जनजागरूकता लाना अपेक्षित है। इस प्रकार जनसम्पर्क और जनसहयोंग विकास–प्रशासन की एक आवश्यक शर्त्त है।

विकास–प्रशासन के कार्यक्षेत्र की अवधारना में ही जनसम्पर्क छुपा है। यह कोई नई परिकल्पना नहीं बल्कि विकास–प्रशासन और जनसम्पर्क एक–दूसरे के साहचर्य आरम्भ से ही रहे है। हाँ ये अवश्य है कि इतिहास की पृष्टभूमि से वर्तमान परिप्रेक्ष्य तक आते–आते जनसम्पर्क का स्वरूप बदलता गया। अब यह व्यापक जनसंचार– माध्यमों के रूप में अवतरित हो गया है।

प्रायः यह देखा जाता है कि जनता अनेको दबाव के कारण विकास–कार्यक्रमों में अपने–आप को सक्रिय रूप से जोड़ नहीं पाती। यद्यपि ''विकास–प्रशासन '' का कार्यक्षेत्र जनजागरूकता पैदा करना जनसहभागिता प्राप्त करना है तथापि वह असफल हैं। कहीं–न–कहीं रूढ़ी तथा गंदी राजनीतिक मंशा इस ओर मुखातिब हो रही है। तब सवाल ये उठता है कि ''विकास–प्रशासन'' को सफल कैसे बनाया जाए? क्या वजह है कि योजनाएँ असफल हो जाती हैं? जनता क्यूं नहीं जुड़ पाती? इन सभी सवालों का जवाब ढूंढने के लिए जनसंचार माध्यमों की भूमिका उभर कर आती हैं। इसलिए पहले यह जानना आवश्यक है कि जनसंचार माध्यम क्या है?

विकास की प्रक्रिया में जनसंचार के माध्यम विकास का कारण और प्रभाव दोनो होते हैं। संचार–माध्यम निर्णय–प्रक्रिया तथा आर्थिक व समाजिक विकास में अत्यन्त सहायक होते है।

''जनसंचार '–इस शब्द समूह में प्रयुक्त शब्द 'संचार' अर्थात् किसी बात को आगे 'बढाना' या 'चलना'या फैलाना'– की मूल धातु संस्कृत की 'चर' है। जिसका मतलब है 'चलना '–की मूल धातु संस्कृति की ' चर ' है। जिसका मतलब है 'चलना'–दूसरों तक पहूँचाते हैंए और ' जनसंचार' कहते है ।

जनसंचार माध्यम' अेग्रेजी मे इसे Mass Communication कहा जाता है यानी ऐसा Medium या communication जो mass या Masses के लिए हो। M के लिए ही हिन्दी में ''जन'' शब्द का प्रयोग किया गया है। जन शब्द अंग्रेजी शब्द People के लिए प्रयुक्त होता है। लेकिन डें जनता को नहीं बरन लोगों के एक ऐसे समूह को कहा जाता है जिसकी अपनी स्वतंत्र पहचान नहीं है। संचार माध्यमों में 'जन' को परिभाषित करने की यह परम्परा काफी रूढ़ हो चुकी है।' संचार का उद्देश्य जानकारी या विचारों को समाज के उन तमाम लोगों के लिए साझा करना है जो इनसे सम्बद्ध है या जिन्हें यह जानकारी पहुँचाना अपेक्षित है, ताकि सभी लोग इनसे अवगत हो जाए या नका लाभ उठा सकें।

जनसंचार माध्यमों के कार्यो को निम्न बिन्दुओं में बाँटा जा सकता है :–

1. परिवेश की चपैकसी, ताकि सामाजिक मूल्यों को प्रभावित करने वाले खतरों और अवसरों का पता चल सके।
2. सामाजिक घटकों में परस्पर संबंध स्थापित करना ताकि परिवेश के अनुसार आवश्यक प्रतिक्रिया हो सके।
3. सामाजिक विरासत और जीवन मूल्यों का अगली पीढ़ी में स्थानांतरण।
4. सूचना, शिक्षा ओर मनोरंजन इसके महत्वपूर्ण कार्य हैं। इसके आलावा इस सूची में एजेण्डा निर्धारण भी जनसंचार के महत्वपूर्ण कार्य में शामिल हो चुका है। इससे ही जनसंचार माध्यम जनमत का निर्माण करते हैं।

''कम्यूनिकेशन इज डेवलपमेंट अर्थात संचार ही विकास है।[11] जनसंचार विशेषज्ञक्लिवर श्रम ने अपनी प्रसिद्ध पस्तक 'मास मीडिया डेवलपमेंट' में लिया है कि संचार–माध्यम दुनिया का नक्शा बदल सकते हैं। किस भी देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण है।

प्रसिद्ध मानव विज्ञानी प्रो० श्यामाचरण दुबे का मानना है कि :– परम्परावादी विकासशील देशों में जनसंचार माध्यमों के सामने कई नई चुनौतियाँ हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि

1. जनसंचार–माध्यमों को आधुनिकीकरण की दौड़ में शामिल हो रहे देशों के लोगों को संक्रमण–काल में हो रहे 'परिवर्तनों के सदमे' को सहने की शक्ति प्रदान करनी चाहिए।
2. परिवर्तन के दौर में होने वाले सांस्कृतिक असंतुलन को बढ़ावा देने के स्थान पर अपनी संस्कृति को सदृढ़ करना चाहिए।
3. संक्रमण काल में लोगों के निजी हितों से अधिक दीर्घावधि की योजनाओं से होने वाले लाभ के प्रति लोगों को प्रेरित करना चाहिए।[12]

स्पष्ट है कि जनसंचार माध्यम राष्ट्र के विकास के लिए प्रभावशाली योगदान कर सकते हैं। इसे प्रगति के औजार के रूप में प्रशासन को उपयोग करना चाहिए।

अपनी बात आम जनता तक पहुँचाने के लिए सरकारी स्तर पर विभिन्न जनसंचार माध्यमों द्वारा सरकार सम्प्रेषण का कार्य करती है। स्वतंत्रताप्राप्ति के पूर्व यह क्षेत्र सीमित था किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सरकार इस दिशा में प्रयत्नशील हुई। भारतीय भाषा अधिनियम बनने के बाद पहली बार सन् 1878 में प्रेस कमिश्नर की नियुक्ति की गई थी। यह पद शीघ्र ही इस अधिनियम के रद्द होने के साथ ही समाप्त हो गया। इसके बाद सरकारी प्रयत्नों का जिक्र करते हुए रामकृष्ण चटर्जी ने कहा है कि ''यह अगली अवस्था पहले विश्वयुद्ध के बाद आई जब गृहविभाग में एक केन्द्रीय प्रचार मण्डल बनाया गया जिसमें सेना, विदेशी विभाग, राजनीतिक विभाग तक कुछ समाचार संवाददाताओं के प्रतिनिध थे। कुछ ही समय बाद मण्डल का स्थान गृहविभाग के एक सेल ने ले लिया जिसका मुख्य कार्य था ब्रिटिश पार्लियामेंट तैयार करना। सेल को यह काम भी सौंपा गया कि वह भारत सरकार की खबरें प्रेस तक पहुँचाए और सरकार की नीतियों एवं कार्यक्रमों से संबंधित जनता की समाचार पत्रों में प्रकाशित प्रतिक्रिया से सरकार को अवगत कराए। वर्ष 1920 में इस सेल का नाम सेंट्रल ब्यूरो ऑफ इन्फोर्मेशन रखा गया। वर्ष 1923 में इसे बदलकर ब्यूरो ऑफ पब्लिक इन्फोर्मेशन कर दिया गया। वर्ष 1935 में इण्डिया ऑफिस के वूचना–निदेशक भारत आए। उन्होंने यहाँ की प्रचारप्रणाली का अध्ययन किया और उनकी

सिफारिशों पर ब्यूरों के प्रकार्य को पुनर्गठित किया गया। सन् 1946 में ब्यूरों का नाम बदलकर प्रेस इन्फोर्मेशन ब्यूरो रख दिया गया।''
दूसरे विश्वयुद्ध के आरम्भ में ब्यूरों ऑफ इन्फोर्मेशन और ऑप इण्डिया रेडियों को गृहविभाग में एक सूचना और प्रसारण विभाग निदेशालय के अधीन जोड़ दिया गया। सन् 1941 में सूचना और प्रसारण विभाग, बना, यही विभाग, केन्द्र बिन्दु बना सूचना और प्रसारण मंत्रालय का।

निष्कर्ष

जनसंचार माध्यमों का ध्यान उन कार्यक्रमों और योजनाओं की समीक्षा के लिए तर्कसंगत प्रश्न उठाने में लगाना चाहिए, जिससे विकास प्रशासन को क्रियान्वयन में सहुलियत हो।
जनसंचार माध्यमों का ध्यान ऐसे तर्क संगत प्रश्नों की ओर होना चाहिए–कि क्या विकास प्रशासन प्रणालियाँ अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सक्षम है, जिनकी प्राप्ति के लिए उन्हें बनाए गए थे। क्या विकास के लक्ष्य आवश्यकताओं से जुड़े हैं, जो उन क्षेत्रो के लिए बनाए गए है। इन माध्यमों का ध्यान इस ओर भी होना चाहिए कि क्या विकास प्रशासन के योजना कार्यक्रमों के दृष्टिपत्रों, संकल्पो में स्थानीय नियोजन की तालमेल की व्यवस्था के साथ–साथ सभी स्तरो पर क्रमबद्धता है। क्या ऐसी सुचारू व्यवस्था उन विकास कार्यक्रमों और योजनाओं में है, जिनके लिए ये कार्यक्रम बनाए गए है, उन तक यह पहुँच रहे है या नहीं। जनसंचार माध्यमों का यह भी काम है कि वो नीति–निर्माण कर्त्ताओं का ध्यान इस ओर इंगित करता रहे कि क्या विकास प्रशासन के योजनाकारों और सामान्य जनता के बीच सीधे और निरन्तर सम्पर्क, तथा विकास नियोजन और कार्यान्वयन की प्रक्रियाओं में सामान्य जनता की भागीदारी की व्यवस्था है। यदि जनता की भागीदारी नहीं है तो विकास–कार्यक्रमों की सफलता नहीं हो सकती। क्योंकि जनसंचार माध्यम सरकार और जनता के मध्य की कड़ी है। उसे एक ऐसा रास्ता बनाना चाहिए, जहाँ से जनता की समझ बढ़ती हो, और से विकास प्रशासन के रास्ते निकलती हों।
विकास कार्यो में खासकर विकास प्रशासन के स्तर पर जनसहभागिता का महत्वपूर्ण स्थान हैं। निर्णय–निर्माण, कार्यान्वयन, कार्यान्वयन का मूल्यांकन करना; अनुश्रवण तथा कार्यक्रमों के परिणाम मे जनसहभागिता का स्थान है। प्रत्येक स्तर पर जनसहभागिता प्राप्त करने के लिए विकास प्रशासन को जनसंपर्क की आवयश्कता होती है; जनसंर्पक बढ़ाने के लिए जनसंचार माध्यमों का अधिक उपयोग किया जाना सही प्रतीत होता है।

संदर्भ

1. अवस्थी, डॉ०ए०पी०, विकास प्रशासन–पृष्ठ–6।
2. लोकप्रशासन, Tata McGraw-Hill Publishing Company Limited,पृष्ठ–1.17।
3. अवस्थी, डॉ०ए०पी०, विकास प्रशासन, वही–।
4. जॉन डी० मॉन्टगोमरी, ए रॉयल इनभिटेशन मरीयेशन ऑन थ्री क्लासिक थीम।
5. लोक प्रशासन, Tata McGraw-Hill Publishing Company , 1.18.
6. अवस्थी, डॉ०ए०पी०, विकास प्रशासन।
7. जनसंचार का सामान्य अध्ययन, इग्नू (MRP- 001-Block 1)
8. संपादक, राधेश्याम शर्मा, जनसंचार।
9. विल्बर श्रम– मास मीडिया एण्ड नेशनल डेवलपमेंट।
10. –वही –
11. जनसंचार का सामान्य अध्ययन, इग्नू (MRP- 001-Block 1)।
12. माथुर, मीना, प्रजातंत्र, प्रेस तथा प्रशासन।
13. योजना, फरवरी, 1999।
14. योजना, सितम्बर–1998।
15. गुप्त, वृजमोहन, जनसंचार : विविध आयाम।